दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा–मद्रास

मई –2009

समय : 10 बजे से 1 बजे तक

दिनांक : 3/06/2009

उच्च शिक्षा और शोध संस्थान

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

एम.ए. द्वितीय वर्ष परीक्षा

विषय : हिंदी (वैकल्पिक) प्रश्न पत्र:8

शीर्षक : विशेष अध्ययन –प्रेमचंद

समय : 3 घंटे पूर्णांक : 75

सूचना : 1. खंड ‘क’ से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

2. सभी प्रश्नों के अंक समान हैं ।

3. खंड ‘ख’ अनिवार्य है ।

4x10=40

खंड–क

1. औपन्यासिक तत्वों के आधार पर **सेवासदन** का विश्लेषण कीजिए ।
2. **घासवाली** दलित जीवन की दारुण कथा है । पठित कहानी के आधार पर उत्तर दीजिए ।
3. **माँ** कहानी भारतीय स्त्री के आजीवन संघर्ष की कहानी है । अपने विचार व्यक्त कीजिए ।
4. **निर्मला** की पात्र–परिकल्पना का परिचय दीजिए ।
5. **गबन** किस प्रकार समाज और राष्ट्र निर्माण में स्त्रियों की भूमिका को दर्शाता है ? स्पष्ट कीजिए ।
6. **गोदान** के प्रमुख पात्रों का परिचय दीजिए ।
7. **ठाकुर का कुँआ** कहानी पढ़कर आपको क्या लगा ? अपने अनुभव प्रस्तुत कीजिए

खंड–ख 5x7=35

8. निम्नलिखित व्याख्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

क) घड़े ने पानी में गोता लगाया ; बहुत ही आहिस्ता । जरा भी आवाज न हुई । गंगी ने दो चार हाथ जल्दी–जल्दी मारे । घडा कुएं की मुहं आ पहुंचा ....

अथवा

हाथ पांव तुड़वा आएगी और कुछ न होगा । बैठो चुपके से । ब्रह्म देवता आशीर्वाद देंगे, ठाकुर लाठी मारेंगे, साहू जी एक के पांच लेंगे । गरीबों का दर्द कौन समझता है !

ख) यह खेती का मजा है ! और एक एक भागवान ऐसे पड़े हैं, जिनके पास जाड़ा जाय तो गर्मी से घबराकर भागे । मोटे–मोटे गद्दे, लिहाफ–कंबल ! मजाल है कि जाड़े का गुजर हो जाए । तकदीर की खूबी है । मजूरी हम करें और मजा दूसरा लूटें ।

अथवा

और एक बड़ी विचित्र बात हुई । हामिद के इस चिमटे से भी विचित्र । बच्चे हामिद ने बूढ़े हामिद का पार्ट खेला था । बुढ़िया अमीना बालिका अमीना बन गई । वह रोने लगी । दामन फैलाकर हामिद

को दुआएँ देती जाती थी और आसूँ की बड़ी–बड़ी बूंदें गिराती जाती थी । हामिद इसका रहस्य क्या समझता !

ग) संयोग उसी वक्त एक कटा हुआ कनकौआ हमारे ऊपर से गुजरा । उसकी डोर लटक रही थी । लड़कों का एक गोल पीछे–पीछे दौड़ा चला आता था । भाई साहब लंबे हैं ही, उछलकर उसकी डोर पकड़ ली और बेतहाशा हॉस्टेल की तरफ दौड़े । मैं पीछे–पीछे दौड़ रहा था ।

अथवा

भोला महतो ने पहली स्त्री के मर जाने के बाद दूसरी सगाई की तो उसके लड़के रग्घू के लिए बुरे दिन आ गए । रग्घू की उम्र उस समय केवल दस वर्ष की थी । चैन से गांव में गुल्ली–डंडा खेलता फिरता था । माँ के आते ही चक्की जुतना पड़ा ।

घ) आपकी खुशी हो दहेज दें या न दें, मुझे इसकी परवाह नहीं, हाँ बारात में जो लोग जाएँ, उनका आदर–सत्कार अच्छी तरह होनी चाहिए, जिसमें मेरी आपकी जगहँसाई न हो ।

अथवा

पुत्र शोक से मुंशी जी का जीवन भार स्वरूप हो गया है । उस दिन से फिर उनके होठों पर हंसी न आई । यह जीवन उन्हें व्यर्थ सा जान पड़ता था । कचहरी जाते, मगर मुकदमों की पैरवी करने के लिए नहीं, केवल दिल बहलाने के लिए ।

च) जिस हार को उसने इतने चाव से खरीदा था जिसकी लालसा उसे बाल्यकाल में ही उत्पन्न हो गई थी, उसे आधे दामों में बेचकर उसे जरा भी दुख नहीं हुआ, बल्कि गर्वमय हर्ष का अनुभव हो रहा था ।

अथवा

पश्चाताप के कड़वे फल कभी न कभी सभी को चखने पड़ते हैं लेकिन और लोग बुराइयों पर पछताते हैं, दारोगा कृष्णचंद्र अपनी भलाइयों पर पछता रहे थे ।

******